e-ISSN 2320 –7876 www.ijfans.org

Vol.11, Iss. 12, Dec 2022

Research Paper © 2012 IJFANS. All Rights Reserved **UGC CARE Listed (Group -I) Journal**

'सीताराम, नमस्कार!' उपन्यास में औद्योगीकरण की समस्या

पंकज कुमार
शोधार्थी (हिंदी)
आई.आई.एम.टी. विश्वविद्यालय
मेरठ (उत्तर प्रदेश)

शोध सार:-

स्वातंत्र्योत्तर मानसिकता और सामाजिक संदर्भों को औद्योगीकरण के विभिन्न तत्वों के माध्यम से हिंदी साहित्य में प्रमुखता से चित्रित किया गया है। आमतौर पर कल-कारखानों की स्थापना आर्थिक विकास के उद्देश्य से की जाती है। इससे बेरोजगारी और गरीबी की समस्या का समाधान निश्चित तौर पर होता है, किन्तु आजादी के बाद की पूंजीवादी मानसिकता ने उद्योगों की स्थापना के प्रतिफल के रूप में वर्ग संघर्ष को पैदा किया है। सामंती सोच और अमानुषिक प्रवृत्ति के कारण गरीबों की जमीन हड़पकर उस पर उद्योगों की स्थापना करना आजकल आम बात है। इसी तथ्य को मार्क्सवादी एवं प्रगतवादी साहित्यकार मधुकर सिंह ने अपने उपन्यास 'सीताराम, नमस्कार!' के जरिये उठाने की कोशिश की है। 'बनवारी सिंह एम.एल.ए.' जैसे शोषक और 'सीताराम पांडे' जैसे अवसरवादी और कुचरित प्रवृति वाले लोग किस तरह 'बुलाकी चमार', 'शंकर' और 'चनर ठाकुर' जैसे ग्रामीणों की जमीन हथियाकर कारखाना का निर्माण करते हैं, इसी विषय वस्तु को मधुकर सिंह ने 'सीताराम, नमस्कार!' के माध्यम से यथार्थपरक अभिव्यक्ति प्रदान की है। कारखाना निर्माण होने के बाद की विभिन्न घटनाओं का भी इस उपन्यास में वर्णन है, जो स्पष्ट रूप से शोषक और शोषित के अंतर्संबंधों को उजागर करता है। वैसे भी इतिहास इस बात का गवाह है कि गरीबों की झोपड़ी को उजारकर ही अमीरों ने कारखाना रूपी विशाल महल का निर्माण किया है। इस संबंध में राष्ट्रकवि रामधारी सिंह 'दिनकर' की यह पंक्तितयाँ ध्यान देने योग्य है कि-

"विद्युत की इस चकाचौंध में, देख दीप की लौ रोती है,

अरी! हृदय को थाम, महल के लिए झोपड़ी बलि होती है।"[1]

बीज शब्द:-

औद्योगीकरण, कारखाना, बेरोजगारी, अभिव्यक्ति, शोषक और शोषित, मजदूर इत्यादि।

मूल आलेख:-

पूँजीवाद को स्थिरता प्रदान करने के उद्देश्य से औद्योगीकरण जैसे तत्व का आगमन हुआ है। औद्योगीकरण ने एक ओर जहाँ आर्थिक विकास के सपने दिखाए तो दूसरी ओर सामाजिक स्तर पर वर्ग संघर्ष को जन्म दिया है। अक्सर उद्योगपति कारखाना स्थापित करने के लिए जनता और अधिकारियों दोनों को धन, बल और छल से अपने जाल में फँसाने की कोशिश करते हैं। मधुकर सिंह कृत सीताराम, नमस्कार!' उपन्यास का खल पात्र 'बनवारी सिंह एम.एल.ए.' लछमनपुर गाँव में बर्तन का कारखाना स्थापित करना चाहता है। इस

Research Paper © 2012 IJFANS. All Rights Reserved, **UGC CARE Listed (Group -I) Journal**

क्रम में वह इलाके के बी.डी.ओ. को अपनी ओर कर लेता है। 'सीताराम पांडे' इस इलाके के पढ़े-लिखे व्यक्तित्व हैं, जो हाल ही में पोस्टमास्टर की नौकरी से सेवानिवृत्त हुए हैं। गाँव के लोगों को इनके ऊपर काफी विश्वास है। जब ये बी.डी.ओ. के पास गाँव और अपने स्वार्थ से संबंधित समस्याएँ लेकर पहुँचते हैं तो बी.डी.ओ. इनकी सारी समस्याओं का समाधान करने का वचन देता है, किंतु बदले में इनके सामने 'बनवारी सिंह एम.एल.ए.' का कारखाना से संबंधित प्रस्ताव भी रख देता है। "वे आप ही के गाँव में बर्तन का कारखाना खोलना चाहते हैं। गाँव से दक्षिण जहाँ चमारटोली है, वहाँ की आधी से ज्यादा जमीन गैरमजरुआ है। मैंने वह सारी जमीन बनवारी सिंह के नाम कर दी है। कम्युनिस्ट पार्टी वाले कुछ हंगामा करेंगे। आपको हमारा साथ देना होगा।"[2]

'सीताराम पांडे' अवसरवादी हैं। वे गाँव के नवयुवकों को कारखाना खोलने के पक्ष में करने की कोशिश करते हैं। नवयुवकों को तरह-तरह का प्रलोभन देते हैं कि इससे बेरोजगारी और गरीबी दूर होगी। साथ ही साथ गाँव का भी विकास होगा। किंतु सीताराम पांडे के इस प्रलोभन से उपन्यास का पात्र 'शंकर', 'बुलाकी चमार' और 'चनर ठाकुर' जैसे ग्रामीण अपने आप को अलग रखना चाहते हैं। ये सभी बर्तन कारखाना खोलने का विरोध करते हैं। इनके अनुसार गरीबों की जमीन हड़पकर कारखाना खोलने का मतलब है विकास नहीं अपितु शोषणात्मक प्रवृत्तियों को बढ़ावा देना। इस संबंध में 'शंकर' और 'सीताराम पांडे' के बीच के वार्तालाप का दृश्य कुछ इस प्रकार है-

"तुम्हें कुछ पता है- तुम्हारे गाँव में बर्तन का कारखाना खुल रहा है। बनवारी सिंह खोल रहे हैं।

'वह बदमाश आदमी है। हमें काम नहीं देगा।'

'जो बड़ा है वह हमेशा बड़ा रहेगा। उन्हें गाली मत बको।'

'तब हम क्या करें?'

'चलकर कम्युनिस्टों का विरोध करो, वे कारखाना बनने नहीं दे रहे हैं।'

चमार टोली को बनवारी सिंह उजाड़ रहे हैं। वे गरीब कहाँ रहेंगे? उनके पास तो सैकड़ों एकड़ अपनी जमीन है। उसमें कारखाना क्यों नहीं लगवाते?"[3]

'शंकर', 'सीताराम पांडे' की बातों से असहमत प्रतीत होता है, किंतु जैसे ही नौकरी की बात आती है, उसे गाँव के जुआ खेलते नवयुवक याद आ जाते हैं। वह सोचता है गाँव के गाँधी चबूतरे पर ताश और जुआ खेलने से बेरोजगारी और गरीबी दूर नहीं होगी। इस कारण काका 'सीताराम पांडे' की बातों पर राजी हो जाता है। इस कथानक को प्रस्तुत करते हुए मधुकर सिंह, सीताराम पांडे की बातचीत को रेखांकित करते हैं- "तुम्हें इससे क्या मतलब है? तुम्हें नौकरी चाहिए कि नहीं? वे शंकर को पुचकारने की तरह बोलते हैं।

चाहिए, पोस्टमास्टर काका!

'तब मेरे दरवाजे पर तुम लोग आना। बी.डी.ओ. से बातें हो गई हैं। सबको काम मिलेगा। जो नहीं आया, हाथ मलता रह जाएगा।'

Research Paper © 2012 IJFANS. All Rights Reserved, **UGC CARE Listed (Group -I) Journal**

'हम आयेंगे काका।'

सीताराम पांडे हँसते हैं, लड़के ठिकाने आ जायेंगे।"[4]

जमीन अचल संपत्ति मानी गयी है। इस कारण लोगों का इससे जुड़ाव होना स्वाभाविक है। खासकर जहाँ रोजगार की कोई सुविधा नहीं है अर्थात् ग्रामीण क्षेत्र के इलाके में तो इसका और भी महत्त्व है। ग्रामीण इलाके में जमीन को एक पारंपरिक विरासत भी माना गया है, जिस कारण किसी भी कीमत पर वे जमीन को छोड़ने के लिए तैयार नहीं होते हैं। 'बनवारी सिंह एम.एल.ए.' लछमनपुर के लोगों को डरा-धमकाकर कारखाने के लिए जमीन चाहता है। 'बनवारी सिंह' कहता है कि जमीन मेरी है। बी.डी.ओ. ने इस गैर मजरुआ जमीन की कागज मेरे नाम से तैयार कर दी है। मैं चाहूँ तो कारखाना खुलकर रहेगा। इस पर 'बुलाकी चमार' कहता है कि हम कहाँ रहेंगे सरकार। गाँव के अन्य युवक भी जमीन देने को तैयार नहीं है। मधुकर सिंह, सीताराम, नमस्कार। उपन्यास के माध्यम से लिखते हैं कि "चनर ठाकुर गाँधी चबूतरे पर खड़ा हो गया है। और कह रहा है, कारखाना खोलना है, तो अपनी जमीन में खड़ा कीजिए। आपके पास सैकड़ों एकड़ जमीन है। हम गाँव उजाड़कर कारखाना नहीं खोलने देंगे।"[5] इस पर पलटकर 'बनवारी सिंह एम.एल.ए.' गाँव के लोगों को भड़काने का काम करता है। 'चनर ठाकुर' को विकास विरोधी बताते हुए कहता है कि "पहचान लो भाइयों! यह चनर हज्जाम राष्ट्र का, तरक्की का दुश्मन है, कम्युनिस्ट है। यह नहीं चाहता कि उद्योग बढ़े। ठीक है तुम लोग जमीन मत छोड़ो। पुलिस आकर आग लगा देगी तब पता चलेगा।"[6]

बर्तन कारखाना के लिए जमीन बेशक अभी तक खाली नहीं करायी गयी हो, किन्तु 'बनवारी सिंह' ने इसके आस-पास के इलाके की सड़कों को कच्ची से पक्की कर दिया ताकि गाड़ियां आसानी से कारखाने तक पहुँच सके। सीताराम पांडे अवसरवादी होने के साथ-साथ भ्रष्ट भी हैं। वे 'बनवारी सिंह' को सलाह देते हैं कि किसी रात पेट्रोमैक्स जलाकर ट्रैक्टर जमीन पर चढ़ा दिया जाए। लोग खुद-ब-खुद अपनी झोपड़ी छोड़कर भाग निकलेंगे। इस पर लेखक लिखता है कि 'लगभग बस पेट्रोमैक्स चारों तरफ से जला दिये गए। सीताराम पांडे आगे आगे अगाह करते जा रहे हैं जल्दी भागो सरकारी हुक्म है। पीछे से ट्रैक्टर आ रहा है। भागो, नहीं तो जमीन सहित आदमी जुत जाएगा। हटो हटो। चमार-टोली में भगदड़ मची हुई है। औरतें, बच्चे मूस की तरह निकल रहे हैं। किसी का भी बस नहीं चलता। सयाने, बूढ़े इधर-उधर दौड़ रहे हैं। मगर गाँव में कोई नहीं सुनता। सभी डरे हुए हैं।"[7] लछमन पुर गाँव की तबाही के मंजर का चित्रण करते हुए आगे मधुकर सिंह लिखते हैं कि "चार-पाँच घंटे में बस्ती उजाड़ हो गई। चनर ठाकुर या गाँव के बीस-पच्चीस कुछ कर भी क्या सकते हैं? दो बंदूकधारी पहलवान ट्रैक्टर पर सवार हैं। जो कोई सामने से आगे बढ़े उसे गोली मार दी जाए। चनर ठाकुर बच्चों को सम्भालने में व्यस्त हैं। उसने उन्हें समझाकर कहा-बताओ, तुम लोग फाँसी पर लटकने के लिए तैयार हो? अगर तैयार हो तो बी.डी.ओ. ने, सीताराम पांडे ने और बनवारी सिंह ने तुम्हें उजाड़ा है। इनसे बदला तुम जैसे भी हो लो। आओ इस लाल झंडे के नीचे। इन दुश्मनों का हम मिल-जुलकर मुकाबला करें। रोसे दुनिया में न कुछ हुआ है, न हो सकता है।"[8] अंततोगत्वा जमीन पर कब्जा हो जाता है और रातों-रात सीमेंट बालू की मदद से ईंट की दीवार चारों तरफ से खड़ी कर दी जाती है। इस प्रकार कारखाने का पूरा एरिया तैयार हो जाता है और जनता बर्तन कारखाना, लछमनपुर का साइन बोर्ड बनाकर लटका दिया जाता है।

मजदूर ही कल-कारखाने के आधार होते हैं। उन्हीं के श्रम से कारखाने चलते हैं। आजकल मजदूरों की स्थिति अच्छी नहीं रही है। स्थिति इतनी बदत्तर हो गई है कि मजदूरों के श्रम के साथ-साथ उनकी जिंदगी का

Research Paper © 2012 IJFANS. All Rights Reserved, **UGC CARE Listed (Group -I) Journal**

कोई मूल्य नहीं है। मजदूर दिन रात मेहनत करते हैं परन्तु उन्हें उनका वास्तविक मूल्य नहीं मिलता है। अक्सर उन्हें खतरनाक और असामान्य परिस्थितियों में काम करना पड़ता है। इस क्रम में उनकी जान तक भी चली जाती है। 'सीताराम, नमस्कार। उपन्यास में जयराम के छोटे भाई भोलू, जिसकी उम्र उन्नीस वर्ष की है, के साथ एक अनहोनी हो जाती है। ईंट ऊपर चढ़ाने के दौरान उसका पैर फिसल जाता है जिससे उसकी मृत्यु हो जाती है। इस घटना का वर्णन करते हुए मधुकर सिंह लिखते हैं कि "तभी कोई आदमी आम की तरह ऊपर से टपका। लगभग सौ डेढ़ फीट ऊपर से। उम्र लगभग उन्नीस वर्ष होगी। जयराम का छोटा भाई। इसी साल मैट्रिक की परीक्षा पास की थी। बाप को आगे पढ़ाने की हिम्मत नहीं थी। बेचारा तीन रुपए रोज पर ईंट ढोने का काम करता था। ऊपर से बाँस से पैर फिसल गया और वह नीचे आ गया था। चारों तरफ खलबली मच गई। लोग बेतहाशा दौड़े। सब-के-सब चिल्ला पड़े, भोलू है। भोलू मर गया है। वह जमीन पर औंधे मुँह पड़ा है। माथा चूर हो गया है।"[9] इस घटना के बाद सभी नवयुवक कारखाने में काम करने से मना कर देते हैं। वे रात-भर भोलू के लाश के साथ पड़े रहे। मजदूरों की लाश पर राजनीति होना हमारी व्यवस्था का एक अंग बन चुका है। बनवारी सिंह के भाई और लड़के बनवारी सिंह की अनुपस्थिति में सहानुभूति तक के लिए भी अपने घर से बाहर नहीं आए। खबर भिजवाया कि भाई साहब से पूछकर कफन के लिए पैसे भिजवा देंगे। मजदूरों को कारखाना मालिक एक वस्तु समझते हैं। दुर्घटना हो जाने पर भी उन्हें और उनके परिवार को वास्तविक हक नहीं मिल पाता है। मजदूरों की इस यथार्थपरक स्थिति पर दुष्यंत कुमार लिखते हैं-

"तुम्हारे पाँव के नीचे कोई जमीन नहीं,
कमाल ये है कि फिर भी तुम्हें यकीन नहीं।
तुझे कसम है, खुदी को बहुत हलाक न कर,
तू इस मशीन का पुर्जा हे, तू मशीन नहीं।"[10]

गाँव में कारखाना खुलने से खेती के लिए मजदूरों की कमी होने लगी। मजदूरों के बिना बड़े किसानों के लिए खेती कर पाना असंभव था। लछमनपुर के किसानों की स्थिति बड़ी विकट थी। इस संबंध में लेखक का यह कथन द्रष्टव्य है कि "कुछ बड़े किसान यह समस्या बतियाते हैं कि अब तो खेती-गृहस्थी के लिए भी मजदूर नहीं मिल सकते। सब तो कारखाने में घुस गए हैं। वे राजा बनवारी सिंह एम.एल.ए. से मिलकर कहना चाहते हैं कि लछमनपुर के सारे मजदूरों को कारखाने से निकाल दें। उनकी गृहस्थी चौपट हो रही हैं।"[11]

कारखाना निर्माण से पहले और बाद में भी 'बुलाकी चमार' और 'चनर ठाकुर' की हरकतों से 'बनवारी सिंह एम.एल.ए.' परेशान रहता था। ये दोनों इसके गले की हड्डी बन चुके थे। इस कारण बनवारी सिंह इन दोनों से बदला लेने के फिराक में था। इसी बीच बनवारी सिंह, 'बुलाकी चमार' की हत्या करवाता देता है और इसके जुर्म में 'चनर ठाकुर' को फँसा देता है। कारखाने का मुंशी 'हरिलाल', 'सीताराम पांडे' से इस बारे में कहता है कि "कारखाने के लिए जो एक खतरा था वह फिलहाल टल गया है। चनर ठाकुर गिरफ्तार हो गया। सीताराम खुशी से उछल पड़ते हैं यह अब अचानक पांडे कैसे हो गया? बाबू बनवारी सिंह ने डकैत और खून के मामले में फँसा दिया है। बरिस-दो बरिस तक वहीं सड़ता रहेगा।"[12] इस पर सीताराम पांडे अत्यंत खुश होते हैं। वे कहते है कि एकाध हत्या और हो जाये तो लछमनपुर भी शांत हो जाएगा और कारखाना का काम भी सुचारू रूप से चलता रहेगा। कारखाना खोलने की पूरी प्रक्रिया के दौरान 'सीताराम पांडे' हर अनुचित कार्य में 'बनवारी सिंह एम.एल.ए.' का साथ देते हैं। इसका पीछे उनका स्वार्थ छिपा हैं वे कहते हैं- "मगर हरिलाल। एक बात तय

Research Paper © 2012 IJFANS. All Rights Reserved, **UGC CARE Listed (Group -I) Journal**

मान लो। बनवारी सिंह जो चाहते हैं, वह होकर रहेगा। मेरी बहू को अब कोई नहीं हरा सकता। बहू लछमनपुर की मुखिया बनेगी।"[13]

निष्कर्षः-

मधुकर सिंह ने 'सीताराम, नमस्कार!' उपन्यास में औद्योगीकरण की संपूर्ण प्रक्रिया से उत्पन्न विभिन्न समस्याओं को पाठकों के सामने रखा है। यह सही है कि उद्योग से विकास की गति को रफ्तार मिलती है, किंतु उद्योगों की स्थापना के पीछे मालिकों की वास्तविक मंशा क्या है, इसकी परख आवश्यक है। जमीन अधिग्रहण की समस्या और उससे उत्पन्न विवाद के कारण संपूर्ण 'लछमनपुर' गाँव में उत्पन्न तनाव और भय के वातावरण को भी लेखक प्रखरता से उजागर किया है। मजदूर और मालिक के बीच सौहार्द्रपूर्ण वातावरण की कमी इस उपन्यास में प्रस्तुत है। इस सौहार्द्रपूर्ण वातावरण की कमी के कारण ही, समय-समय जनता बर्तन कारखाना बंद करने की नौबत आती रही है। पूँजीवादी मानसिकता, सामंती प्रवृत्ति तथा ऊँची और नीची जाति के बीच वैमनस्य का प्रतिफल औद्योगीकरण के दौरान इस उपन्यास में भी देखने को मिलता है। कुल मिलाकर कहा जा सकता है कि आजादी के बाद उद्योगों को लेकर जमीन अधिग्रहण की समस्या, मालिक-मजदूर संबंधों की सत्यता और कल-कारखानों से उत्पन्न सामाजिक और सांस्कृतिक प्रदूषण को मधुकर सिंह ने 'सीताराम, नमस्कार! के उपन्यास के द्वारा चित्रित किया है।

संदर्भ सूची

1. रामधारी सिंह 'दिनकर', रेणुका, उदयाचल प्रकाशन, पटना, पृ. 39
2. मधुकर सिंह, सीताराम, नमस्कार! (समय कथाचक्र), आत्माराम एंड संस, दिल्ली, प्रथम संस्करण 2013, पृ. 182
3. वही, पृ. 184
4. वही, पृ. 186
5. वही, पृ. 186
6. वही, पृ. 191
7. वही, पृ. 191
8. वही, पृ. 191-192
9. वही, पृ. 193
10. दुष्यंत कुमार, साये में धूप, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ. 64
11. मधुकर सिंह, सीताराम, नमस्कार! (समय कथाचक्र), आत्माराम एंड संस, दिल्ली, प्रथम संस्करण 2013, पृ. 206
12. वही, पृ. 203
13. वही, पृ. 204